साधारण नारी नहीं / कविता

काश मै यहाँ से दूर चली जाती,
महलों की हवा मुझसे टकरा जाती है,
चोट मुझे कहा लगे,पता नहीं
पैर मे छाले पड़े हैं या मखमली चप्पलें, पता नहीं
छाँव अपनों के थे फिर तन्हाइयाँ सयानी कैसे हुई ,
किताबें धूल झाड़कर मेरे पास क्यों आयें,
बड़े तो हम उनके सहारे हूए थे,
फिर घड़ियों की खर्राटे मे खामोशी क्यों सोई रही,
भीड मे हाथ उनके थे फिर मै दूसरों के हाथ क्यों पकड़ी,
लुका छिपी कब तक और क्यों,
क्या मैं चोर हूँ या पुलिस
पता नही ,
सीना तानकर चलना मर्दानगी है,
और मै मर्द नही,
फिर सिर झुकाकर चलना मेरे बस में नहीं,
कौन सी राहें चलूँ मैं,
मेरी सखियाँ तो एक ही राह पकड़ती हैं,
पर मै उसपे चल नही सकती,
मेरे कदम बहुत बड़े हैं
और शायद निशान गहरे भी,
यह रास्ते मुझे बर्दाश्त नही कर सकते,
कई खरी खोटी भी सुना देते हैं,
ये जमाने का ढँढोरा है,
मेरे पायल की अवाज नहीं,
शायद मैं पायल पहन नही सकती ,
चूडियाँ खनका नही सकती ,
फिर मै नारी कैसी,
कई प्रश्नचिह्न अस्तित्व को घेरे है,
फिर ये मोहब्बत की बिंदिया कैसी ,
जो रंगीन से सफेद हो गई ,
फिरभी गिरी नही,
शायद मै कोई साधारण नारी नही।

-साइबर नजर

माई लॉर्ड बोबड़े साहब, सीजेआई की कुर्सी पर बैठकर आप धरना देने वाली माँओं द्वारा बच्चों को धरने में ले जाने से होने वाले कष्टों से बहुत चिंतित हो गए हैं। बडी अच्छी बात है।

रोज करोड़ों मजदूर माँओं को काम पर भी अपने बच्चों को ले जाना पड़ता है। कमर पर बच्चे को लटकाए ईंटें ढोती इस माँ को देखिये। क्या उससे भी कभी कोई चिंता हुई आप जैसो को ?

व्यंग्य / अप्रैल फूल

डॉ. रामवीर

लेने में हम बहुत उदार हैं। कहीं से कुछ भी मिल जाए ले लेते हैं। ठीक है देते भी हैं, पर भारतीय अर्थ व्यवस्था की तरह जिस में आयात अधिक और निर्यात न्यून है - हम लेते ज्यादा हैं, देते कम हैं। यूरोप से हम ने और कुछ भले न लिया हो उन का अप्रैल फूल डे अवश्य अपना लिया। महीना भर पहले होली के रूप में अपना देसी मूर्खता दिवस मना चुकने के बाद भी हम अप्रैल फूल डे भी मनाते हैं। औपनिवेशिक मानसिकता का एक लक्षण यह भी है कि जनता अपने रीति रिवाज के साथ साथ दूसरों के रिवाज भी निभाती है यानि अधिकतर मामलों में दूना भार ढोती है। अपने तरीके से मार्च में होली मना कर फिर अप्रैल फूल भी मनाती है।

कूए भले न रहे हों, कूआ पूजन उत्सव अब भी मनाया जा रहा है। 'हैप्पी बर्थडे टू यू' मन्त्रोच्चारण के साथ केक की हवि देने की रीत भी सोत्साह निभाई जाती है। लकीर के फकीर हर देश में होते हैं, पर दो दो लकीरें पीटने वाले फुर्सतिये भारत

में अधिक हैं। कल के नायक और आज के खलनायक जवाहरलाल नेहरू ने भाखड़ा नंगल बांध का उद्घाटन करते हुए उसे आधुनिक भारत का मन्दिर कहा था तो भूतपूर्व खलनायक और आज के नायक नरेन्द्र मोदी वाराणसी के विश्वनाथ मन्दिर को काशी कोरिडोर बना कर भाव विभोर हैं।

जब से टीवी चैनल्स पर कार्पोरेट्स का कब्जा हुआ है और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर अमित मालवीय की पैदल सेना सक्रिय हुई है तब से हर दिन ही अप्रैल फूल (मूर्ख दिवस) बन गया है। 364 दिन मूर्ख बनने वालों को पहली अप्रैल को एकदिनी अप्रैल फूल मनाने की जरूरत तो नहीं है पर परम्परावादी परम्परा निभाने में बड़े पर्टिक्युलर होते हैं इस लिए पहली अप्रैल का मूर्खोत्सव भी धूमधाम से मनाते हैं।

सरकार और विपक्ष अपने अपने अंदाज में परस्पर और दोनों मिल कर जनता को मूर्ख बनाने का मजा लेते रहते हैं। यह प्रक्रिया जब लगातार चलती है तो एक बड़े वर्ग को मूर्ख बनने में ही आनन्द आने लगता है, यदि प्रक्रिया रुकती है तो लोग बोर होने लगते हैं। तो पहली अप्रैल को अप्रैल फूल बनाने रस्म अदायगी करते हुए प्रधानमन्त्री ने कहा कि कुछ लोगों ने मेरा नाम खराब करने की सुपारी दी हुई है। यह सुपारी देने की पारी खेली तो थी मूर्ख बनाने के लिए पर जनता है कि कभी कभी मूर्ख न बनने पर अड जाती है, उक्त समाचार के नीचे दिए कमेंट्स में एक सज्जन पूछ रहे हैं कि हरेन पांड्या की सुपारी किस ने दी थी ? लो बोलो कल्लो बात ! ये जनता है सब जानती है।

विशेष / सर्वाधिक चमकते सितारे

ओशो

महाकवि सुमित्रानंदन पंत ने एक बार ओशो से पूछा !

भारत के धर्माकाश में वे कौन बारह लोग हैं जो सबसे चमकते हुए सितारे हैं ?

ओशो बोले - मेरी दृष्टि में जो सबसे महत्वपूर्ण चमकते हुए सितारे हैं वे ~ कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, नागार्जुन, शंकर, गोरख, कबीर, नानक, मीरा, रामकृष्ण, कृष्णमूर्ति !

सुमित्रानंदन पंत सोच में पड़ गये !

सूची बनानी आसान भी नहीं है, क्योंकि भारत का आकाश बड़े नक्षत्रों से भरा है !

किसे छोड़ो, किसे गिनो ?

वे सभी प्यारे व्यक्ति थे—अति कोमल, अति माधुर्यपूर्ण, स्त्रैण ! वृद्धावस्था तक भी उनके चेहरे पर वैसी ही ताजगी बनी रही जैसी बनी रहनी चाहिए। वे सुंदर से सुंदरतर होते गये थे ! मैं उनके चेहरे पर आते—जाते भाव पढ़ने लगा ! उन्हें अड़चन भी हुई थी ! कुछ नाम, जो स्वभावत~ होने चाहिए थे, नहीं थे ! राम का नाम नहीं था !

उन्होंने आंखें खोली और कहा ~ राम का नाम छोड़ दिया है आपने !

मैंने कहा ~ मुझे अगर बारह ही चुनने हो तो बहुत नाम छोड़ने पड़ेंगे ! फिर मैंने बारह नाम ऐसे चुने हैं जिनकी कुछ मौलिक देन है ! राम की कोई मौलिक देन नहीं है, कृष्ण की मौलिक देन है ! इसलिये हिंदुओं ने भी उन्हें पूर्णावतार नहीं कहा !

उन्होंने फिर पूछा ~ तो फिर ऐसा करें, कोई सात नाम दें !

अब बात और कठिन हो गयी थी ! ?

मैंने उन्हें सात नाम दिये ~ कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, शंकर, गोरख, कबीर !

उन्होंने कहा ~ आपने जो पांच नाम छोड़े, अब उन्हे किस आधार पर छोड़े हैं ?

मैंने कहा ~ नागार्जुन बुद्ध में समाहित हैं ! जो बुद्ध में बीज—रूप था, उसी को नागार्जुन ने प्रगट किया है ! नागार्जुन छोड़े जा सकते हैं ! और जब बचाने की बात हो तो वृक्ष छोड़े जा सकते हैं, बीज नहीं छोड़े जा सकते ! क्योंकि बीजों से फिर वृक्ष हो जायेंगे, नये वृक्ष हो जायेंगे ! जहा बुद्ध पैदा होंगे वहा सैकड़ों नागार्जुन पैदा हो जायेंगे, लेकिन कोई नागार्जुन बुद्ध को पैदा नहीं कर सकता ! बुद्ध तो गंगोत्री हैं, नागार्जुन तो फिर गंगा के रास्ते पर आये हुए एक तीर्थस्थल हैं—प्यारे ! मगर अगर छोड़ना हो तो तीर्थस्थल छोड़े जा सकते हैं, गंगोत्री नहीं छोड़ी जा सकती !

ऐसे ही कृष्णमूर्ति भी बुद्ध में समा जाते हैं ! कृष्णमूर्ति बुद्ध का नवीनतम संस्करण हैं—आज की भाषा में ! केवल भाषा का ही भेद है ! बुद्ध का जो परम सूत्र था—अप्प दीपो भव—कृष्णमूत्रि बस उसकी ही व्याख्या हैं ! एक सूत्र की व्याख्या—गहन, गंभीर, अति विस्तीर्ण, अति महत्वपूर्ण! पर अपने दीपक स्वयं बनो, अप्प दीपो भव—इसकी ही व्याख्या हैं ! यह बुद्ध का अंतिम वचन था इस पृथ्वी पर ! शरीर छोड़ने के पहले यह उन्होंने सार—सूत्र कहा था। जैसे सारे जीवन की संपदा को, सारे जीवन के अनुभव को इस एक छोटे—से सूत्र में समाहित कर दिया था ! रामकृष्ण, कृष्ण में सरलता से लीन हो जाते हैं ! मीरा, नानक, कबीर में लीन हो जाते हैं; जैसे कबीर की ही शाखायें हैं ! जैसे कबीर में जो इकट्ठा था, वह आधा नानक में प्रगट हुआ है और आधा मीरा में। नानक में कबीर का पुरुष—रूप प्रगट हुआ है। इसलिए सिक्स धर्म अगर क्षत्रिय का धर्म हो गया, योद्धा का, तो आश्चर्य नहीं है। मीरा में कबीर का स्त्रैण रूप प्रगट हुआ है—इसलिए सारा माधुर्य, सारी सुगंध, सारा सुवास, सारा संगीत, मीरा के पैरों में घुंघरू बनकर बजा है ! मीरा के इकतारे पर कबीर की नारी गाई है; नानक में कबीर का पुरुष बोला है ! दोनों कबीर में समाहित हो जाते हैं !

इस तरह, मैंने कहा मैंने यह सात की सूची बनाई। अब उनकी उत्सुकता बहुत बढ़ गयी थी। उन्होंने कहा- और अगर पांच की सूची बनानी पड़े ? तो मैंने कहा ~ काम मेरे लिये कठिन होता जायेगा !

मैंने यह सूची उन्हें दी- कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, गोरख। ! क्योंकि कबीर को गोरख में लीन किया जा सकता है। गोरख मूल हैं। गोरख को नहीं छोड़ा जा सकता। और शंकर तो कृष्ण में सरलता से लीन हो जाते हैं। क्या के ही एक अंग की व्याख्या हैं, कृष्ण के ही एक अंग का दार्शनिक विवेचन हैं।

तब एक बार और...। अगर चार ही रखने हों ?

तो मैंने उन्हें सूची दी ! कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, गोरख ! क्योंकि महावीर बुद्ध से बहुत भिन्न नहीं हैं, थोड़े ही भिन्न हैं ! जरा—सा ही भेद है; वह भी अभिव्यक्ति का भेद है ! बुद्ध की महिमा में महावीर की महिमा लीन हो सकती है !

वे कहने लगे- बस एक बार और !

आप अब तीन व्यक्ति चुनें !

मैंने कहा : अब असंभव है ! अब इन चार में में से मैं किसी को भी छोड़ न सकूंगा! फिर मैंने उन्हें कहा ~ जैसे चार दिशाएं हैं, ऐसे ये चार व्यक्तित्व हैं ! जैसे काल और क्षेत्र के चार आयाम हैं, ऐसे ये चार आयाम हैं ! जैसे परमात्मा की हमने चार भुजाएं सोची है !
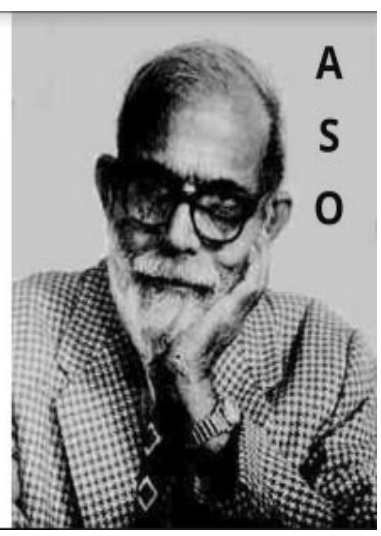
जिस तरह रसायन-विज्ञान की पढ़ाई ने रसायन विद्या को व औषधि विज्ञान ने जादू टोने को नकार दिया, ठीक उसी तरह खगोल-विज्ञान की पढ़ाई ने 'ज्योतिष' को एक विज्ञान मानने से साफ इन्कार कर दिया।
- अब्राहम टी. कोवूर